पूर्व राज्यपाल श्री के. सी. रेड्डी का भाषण

24 अप्रैल 1967

आज नई विधान सभा के इस पहले अधिवेशन में आप सबका हार्दिक स्वागत करते हुए मुझे बड़ी प्रसन्नता हो रही है।

हमने अभी गणतंत्र की स्थापना के बाद चौथी बार देशव्यापी आम चुनाव देखा। सामान्यतः वे चुनाव सारे देश में और विशेष रूप से हमारे इस बड़े राज्य में जिस शांति और व्यवस्था के साथ सम्पन्न कराये गये उसका श्रेय जनता को है। चुनाव से यह बात पूरी तरह सिद्घ हो गई है कि हमारी जनता का प्रजातंत्र में पूरा विश्वास है। यह सदन उसी विश्वास का एक प्रतीक है। हमें चाहिये कि हम सच्चे प्रजातंत्रि तक ढंग से जनता की सेवा के लिये अपने आपको पुनः समर्पित कर दें।

पिछली विधान सभा के कार्यकाल में राष्ट्र अनेक नाजुक घड़ियों से गुजरा। उसने चीन और पाकिस्तान के साथ सशस्त्र संघर्ष देखा और पं. जवाहरलाल नेहरू तथा श्री लाल बहादुर शास्त्री जैस राष्ट्रीय नेताओं का निधन भी। वर्ष-प्रति वर्ष हमारे देश का एक बड़ा भू-भाग भयंकर सूखे जैसी प्राकृतिक विपत्तियों का शिकार होता रहा। कुछ आसमाजिक तत्वों ने जिनका प्रजातंत्र में विश्वास नहीं है हिंसा का सहारा लेकर हमारी जनता के सामान्य जीवन को अस्त-व्यस्त करने के प्रयत्न किये। इस संदर्भ में पिछली विधान सभा को एक कठिन कार्य करना था और मुझे खुशी है कि सदन ने इस चुनौती का सफलता पूर्वक सामना किया। सदन के सभी वर्गों ने चाहे वे सत्ताधारी दल के रहे हों या विरोधी पक्ष के अपने कर्तव्यों का पालन संविधान के अनुरूप तथा प्रजातांत्रिक भावना से किया। इस कार्य में सदन सदन को अपने अध्यक्ष डॉ. कुंजीलाल दुबे के मार्गदर्शन का सौभाग्य प्राप्त था जिन्होंने सदन की मर्यादा को बनाये रखा और उसके कार्यसंचालन की स्वस्थ परम्परायें कायम की। अपने कर्तव्यों के पालन में उन्हें सदन के नेता पं. द्वारकाप्रसाद मिश्र जो कि इस विधान सभा के भी नेता हैं और विरोधी दलों के नेताओं से भी पूरा-पूरा सहयोग मिला। मुझे विश्वास है कि इस सदन के अध्यक्ष को भी वाद-विवाद का उच्च स्तर स्वस्थ परम्पराएं तथा सदन की मर्यादा एवं प्रभुता बनाये रखने में वैसा ही सहयोग मिलेगा।

राज्य के संवैधानिक प्रमुख के रूप में मुझे भी अपने कर्तव्यों के पालन में पिछली विधान सभा के सभी वर्गो से पूरा- पूरा सौजन्य सहयोग और समादर प्राप्त हुआ है। इस अवसर पर मैं इस सबके लिये आभार व्यक्त करना चाहता हूं।

lHkh oxk l ijk&ijk lktU;] lg;kx vkj leknj çklr gvk gA bl volj ij eSa bl lcds fy;s vkHkkj O;fä djuk pkgrk gwaA